Training Notes

(नोट्स-निर्माता)
प्रशान्त अग्रवाल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया
विकास क्षेत्र : फतेहगंज पश्चिमी
जनपद बरेली

Training Notes

'अनुक्रमणिका'

प्रशिक्षण का नाम	प्रशिक्षण-स्थल
• बच्चों का पढ़ने से परिचय	Online प्रशिक्षण
• उपचारात्मक शिक्षण प्रशिक्षण	Online प्रशिक्षण
• ऑनलाइन मॉड्यूल प्रशिक्षण	Online प्रशिक्षण
• पाठ्यचर्या और समावेशी कक्षा	Online प्रशिक्षण
• Learning Outcome	SCERT, लखनऊ
• क्षमता संवर्द्धन	BRC, फतेहगंज प., बरेली
• योगासन में सावधानियाँ	BRC, फतेहगंज प., बरेली
• संस्कृत प्रशिक्षण	SIE, प्रयागराज
• संस्कृत वाग्व्यवहार कार्यशाला	DIET, बरेली
• अंग्रेज़ी भाषा कौशल विकास (EGR)	DIET, बरेली
• प्राथमिक स्तरीय हिंदी-गणित	BRC, फतेहगंज प., बरेली
• for English Medium Teachers	DIET, बरेली

~ प्रशिक्षण-सार ~

"बच्चों का पढ़ने से परिचय"

(जैसा मैंने सीखा-समझा)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

• 'बिना समझे पढ़ पाना' decoding कहलाती है, पढ़ना नहीं। पढ़ने का अर्थ है, 'समझते हुए पढ़ना'।

• Decoding सीखना भी पढ़ने का आवश्यक चरण है लेकिन यदि decoding की सामग्री या प्रक्रिया में रोचकता और चुनौती न हो, तो बच्चे जल्दी ही ऊब जाते हैं और पढ़ना छोड़ देते हैं। इसलिए शुरुआती सामग्री उनकी किसी मनपसंद कहानी आदि की हो, तो बेहतर होगा।

• शुरुआत में Site words method का प्रयोग भी अच्छा है, जिसमें बच्चे की नज़र में आने वाली रोज़मर्रा की सामग्री (कुर्सी, मेज, दरवाजा आदि) पर labelling कर दी जाये ताकि बच्चा print सामग्री के प्रति सहज हो जाये।

• Sylvia Ashton Warner की Organic reading के तहत बच्चों की भावनाओं को भी कक्षा में जगह मिलनी चाहिए। जैसे शुरुआत में बच्चों के कहे शब्द को ही कार्ड पर लिखकर उन्हें देना, व बाद में सब बच्चों के कार्ड्स मिलाकर बच्चों से अपने-अपने कार्ड्स निकलवाना। बच्चे का अपना दिया हुआ शब्द होने से उसमें उसे समझने-परखने की विशिष्ट रुचि होगी।

• साम्यता रखने वाले अक्षरों से बने शब्दों के बजाय हम भिन्न आकार वाले अक्षरों से बने शब्द जल्दी पहचानते हैं। जैसे 'मगन' की बजाय 'वजन' जल्दी पहचानेंगे।

• बच्चे हों या बड़े, हम सभी पढ़ने में 'अनुमानों' का सहारा लेते हैं (पूरा शब्द पढ़ने की बजाय उसकी आकृति को भांपने का अनुमान)। चूंकि हम बड़ों का अभ्यास अधिक है, इसलिए हमारे अनुमान अधिक सटीक होते हैं। उक्त अनुमान में एक प्रकार का risk उठाना होता है और एक आत्मविश्वासी बच्चा ऐसा risk अधिक उठा सकता है।

• बच्चे भले ही गलत पढ़ रहे हों, उन्हें बिना ज़्यादा टोके पढ़ने देना चाहिए क्योंकि एक तो जब बदले संदर्भ में वही शब्द उन्हें फिट नहीं लगेगा तो वे स्वयं गलती सुधार लेंगे, दूसरे ज़्यादा टोका-टोकी से उनमें संभाव्य गलती का डर बैठेगा जो उनके आत्मविश्वास को हिला देगा, और वे 'अनुमान' लगाने से हिचकेंगे या लगाना ही बंद कर देंगे।

• एक विचित्र भूल : अत्यंत श्रेष्ठ मिसालें कई बार बच्चों को प्रेरित करने की बजाय डराने या शर्मिंदा करने वाली भी बन सकती हैं, तब, जब बच्चा उन्हें बहुत कठिन या अपनी क्षमता से बाहर का अनुभव करे। इसीलिए बच्चे अपने से कहीं अधिक योग्य शिक्षकों के मुकाबले अपने ही बड़े साथियों से ज़्यादा जल्दी सीखते हैं क्योंकि उन बड़े साथियों की योग्यता उन्हें अपने से थोड़ी ही अधिक और पहुँच के भीतर लगती है।

• घर का वातावरण हो या विद्यालय का, बच्चे में अलगाव की भावना उसके पढ़ने की क्षमता को प्रभावित करती है। अतः प्यार-भरे वातावरण के निर्माण की बहुत आवश्यकता होती है।

~ 'उपचारात्मक शिक्षण' प्रशिक्षण ~

की

एक बेहद खास Slide

रोसेन्थोल और जैकब्सन नामक मनोवैज्ञानिकों ने एक रोचक प्रयोग किया। ओप नामक स्कूल में इन्होंने एक कक्षा के बच्चों का IQ (बुद्धिलब्धि) test लिया। और उसमें से अच्छे अंक पाने वाले बच्चों के नाम उनके अध्यापकों को बता दिये।

जबकि असलियत यह थी कि इन्होंने जिन बच्चों के नाम बताये थे, वे अच्छे अंक के आधार पर नहीं बल्कि बेतरतीब ढंग से randomly छांट कर दे दिये थे।

लेकिन फिर हुआ यह कि अध्यापक उन बच्चों के प्रति अधिक सकारात्मक व्यवहार करने लगे; जैसे उनकी ओर देखकर मुस्कुराना, उनमें भरोसा जताना, उन्हें चुनौतीपूर्ण कामों में मौका देना आदि। और आश्चर्यजनक रूप से सत्रांत तक उन बच्चों के प्रदर्शन में वाकई अभूतपूर्व सुधार आ चुका था।

निष्कर्ष : हम अध्यापक भी अपनी पूर्वधारणाओं (भले ही वे वास्तविकता पर आधारित हों) के आधार पर कमज़ोर बच्चों के प्रति कई बार ऐसा रुख अपनाते हैं, जिससे उनका मनोबल टूटने से वे और अधिक कमज़ोर होते जाते हैं।

'तोत्तो चान' पुस्तक में भी हेडमास्टर जी के जिस एक वाक्य ने उस बच्ची का जीवन बदल दिया था, उससे भी तो यही निष्कर्ष निकलता है कि कमज़ोर को उसकी कमज़ोरी का नहीं, उसके अंदर निहित क्षमताओं का अहसास दिलाकर प्रेरित करो।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

"ऑनलाइन मॉड्यूल प्रशिक्षण के कारगर बिंदु"

(16वां बैच, 29.7.2020, फतेहगंज पश्चिमी, बरेली)

- हमारे पास आने वाले 6 वर्ष के बच्चे के पास भी लगभग 2500 शब्दों का भंडार होता है।

- मुख्य काम है : बच्चे की बोलने की झिझक मिटाना।

- बच्चे की परिवेशीय भाषा का सम्मान हो। (उदाहरणस्वरूप यदि बच्चे ने मेंढक को मुरका कहा तो यह न कहें, "इसे मुरका नहीं मेंढक कहते हैं", बल्कि यह कहें कि "मुरका को मेंढक भी कहते हैं।")

- पुस्तक के आरंभ में कविता क्यों? ताकि
  1. बच्चे की रुचि जागे
  2. कविता याद होकर तत्सम्बन्धी शब्दों को बच्चा उंगली रखकर पहचाने जिससे आत्मविश्वास जागे।
  3. पढ़ाई का first impression सुखद एहसास बने।

- वाक्य चेतना > शब्द चेतना > वर्ण चेतना

- बोले हुए का लिखित रूप coding
  लिखे हुए को पढ़ पाना decoding

- (लेखन के लिए अंगुलियों को चलायमान बनाने के उद्देश्य से एक गतिविधि यह भी)
  बच्चों को छोटे मुँह वाली खाली बोतल देकर उसमें मिट्टी/रेत भरने के लिए कहना जिससे वे चुटकी बनाकर/अंगुलियाँ चलाकर अभ्यास करें।

- गतिविधि के दो अनिवार्य घटक : रोचकता और चुनौती

- अधिक खिड़कियाँ, अधिक हवा
  अधिक इन्द्रियाँ, अधिक ज्ञान
  (जिस पठन गतिविधि में अधिकाधिक इन्द्रियाँ सक्रिय रहें, वह उतनी ही सफल)

- शब्द हमारे लिए एक 'समग्र आकृति' बन चुके हैं (logographic reading) (हम 'अयोग्य सेतु' को शीघ्रता में 'आरोग्य सेतु' ही पढ़ लेंगे) किन्तु बच्चा अभी उसे वर्ण-मात्रा में तोड़कर पढ़ रहा है, अतः धैर्य रखें और उसकी धीमी गति पर भी उसका उत्साह बढ़ाते रहें।

- ध्यानाकर्षण शिविर में होशियार और कमज़ोर बच्चों को अलग-अलग नहीं बैठाना है, वरना कमज़ोर बच्चों में हीन-भावना भर जायेगी।

- Leadership quality (नेतृत्व)
  Leader knows (पथ जानता है)
  Leader shows (पथ दिखाता है)
  Leader goes (पथ पर चलता है)

[ज्ञान-स्रोत : माननीय ARPs (विशेषकर श्री जे.पी. तिवारी जी)]
[नेतृत्व : माननीय BEO मैम]
(संकलन : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

'पाठ्यचर्या और समावेशी कक्षा' : प्रशिक्षण बिंदु

(जिन्होंने मुझे विशेष प्रभावित किया)

- बच्चे धीरे-धीरे सीखते हैं, जब :
  1. वे भूखे हों 2. पाठ उबाऊ हो 3. उनके घर का माहौल अशांत हो 4. Traffic आदि का अवांछित शोर हो, आदि
- बच्चे जल्दी सीखते हैं, जब :
  1. पढ़ाई में कहानी हो 2. शिक्षक softly बोलते हों 3. उन्हें डाँट पड़ने का डर न हो, आदि
- बच्चे बड़ों के मुकाबले अपने हम-उम्र बच्चों से पढ़ने-सीखने में अधिक सहज होते हैं।
- बच्चों को मज़ा आता है जब किताब का content उसमें बने चित्रों से मेल खाता है।
- बच्चों को नीरस लगता है, जब उन्हें कहा जाता है, "पृष्ठ संख्या ... खोलकर reading करो।"
- एक ही प्रश्न पर भिन्न प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करें।
- प्रश्न पूछने के बाद उत्तर हेतु पर्याप्त समय दें।
- मौखिक या लिखित के अलावा फ़्लैश कार्ड आदि वस्तुगत प्रदर्शन से भी उत्तर देने का विकल्प बच्चों को दिया जा सकता है।
- बच्चों के बीच के अंतर को समझें, स्वीकार करें और उसका सम्मान करें। कोई भी एक 'आकार' सबके लिए 'fit' नहीं होता। प्रशान्त अग्रवाल, बरेली
- बच्चों की तुलना करने से यथासंभव बचें।
- चित्र-कार्ड के प्रयोग में केवल 2 रंगों या प्राथमिक रंगों को ही रखें क्योंकि सभी बच्चे रंगों के बारीक अंतर को आसानी से नहीं समझ पाते।
- खास बात तर्कसहित : विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा सामान्य बच्चों के साथ ही होनी चाहिए क्योंकि :
  1. जब उन्हें बड़े होने पर भी सामान्य लोगों के बीच ही अनुकूलित होना है तो उन्हें बचपन से ही इसके लिए प्रशिक्षित क्यों न किया जाये।
  2. इस प्रकार के समावेशन से सामान्य बच्चे भी बचपन से ही विशिष्ट बच्चों के प्रति संवेदनशील और सहज बनेंगे।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की ओर अनावश्यक ध्यानाकर्षण कर उन्हें असहज न करें।
- एक ही विशेष आवश्यकता वाले दो बच्चों को भिन्न प्रकार के सहयोग की आवश्यकता हो सकती है।
- अधिकाधिक गतिविधियों में CWSN को शामिल करने का प्रयास करें जैसे क्रिकेट में अंपायर की भूमिका देकर।
- दृष्टिबाधित बच्चों को उनका नाम लेकर संबोधित करें, उन्हें अग्रिम पंक्ति में या अपने समीप बैठायें, उनके मार्ग में पर्याप्त रिक्त स्थान हो, कक्षा यथासंभव गोलाकार या अर्द्धगोलाकार हो, एक साथी को सहयोगी की जिम्मेदारी सौंपें, निर्देश स्पष्ट आवाज़ में दें।
- श्रवण-बाधित बच्चों को चित्र दिखाते हुए बहुत धीरे-धीरे बोलें ताकि वे हाव-भाव और lip reading से समझ सकें, उनके एकाक्षरी प्रत्युत्तरों को स्वीकार करें, समूह गतिविधि में समूह के अन्य सदस्यों को एक-एक करके बोलने को कहें।

(प्रस्तुतकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

Learning outcome प्रशिक्षण में विद्वानों से प्राप्त प्रेरक विचार

(स्थान : SCERT, लखनऊ) (दिनांक : 10-12 सितंबर 2018)

- हम तो बहुत कुछ कर सकते हैं, सवाल यह है कि हम बच्चों से कितना करवा पाते हैं।
- Appreciate the people.
  Criticize the thing.
- अच्छा trainer वही बन पाता है, जो trainees के मनोभावों तक पहुँच पाता है।
- (Trainers to trainees) We are among you. Then why on this side? Just to give support.
- Credit साथियों को दें, liability खुद पर लें।
- General teacher is apart of you.
  Great teacher is a part of you.
- Teacher is a hero for students.
- Teachers are magicians.
- कोई ऐसा अक्षर नहीं, जिसमें मंत्रात्मक शक्ति न हो,
  कोई ऐसा पौधा नहीं, जिसमें कोई औषधीय गुण न हो,
  कोई ऐसा बच्चा/व्यक्ति नहीं, जिसमें कोई योग्यता न हो।
- Main role (90%) is of teacher. प्राचीन गुरुकुलों में facilities थोड़े ही थीं, गुरु का ही तो महत्त्व था।
- शिक्षक का एक-एक शब्द, छोटे से छोटा आचरण बूँद-बूँद करके विद्यार्थी (और प्रकारांतर से भावी समाज का) निर्माण करता है।
- अपने कार्यों का तेज इतना प्रबल हो, कि कोई अधिकारी/प्रधान आदि आपका शोषण न कर सके।
- संसार में बहुत लोग अपनी जगह सही हैं, हमें भी कहीं न कहीं अपना नजरिया बदलने की ज़रूरत है।
- डरना नहीं है, डटना है।
- दबाव में फाँसी लगाने वाले convent के बच्चे होते हैं, सरकारी विद्यालयों के नहीं।
- Competition से भी बड़ी चीज है Cooperation
- Mind is a factory of thoughts.
- (छड़ी गतिविधि) दृष्टिकोण ऊँचा रहेगा तो सफलता अधिक टिकाऊ बनेगी।
- Energy level should be maintained till last.
- अपना सुझाव या आलोचना प्रस्तुत करते समय CDC विधि अपनायें :
  Connect (पहले सकारात्मक बिंदु)
  Disconnect (आलोचनात्मक बिंदु)
  Connect (सकारात्मकता से अंत) (हमारा सुझाव अधिक सुग्राह्य बने।)
- कोई कुछ न कर रहा हो तो हम ही first step उठाकर नेतृत्व करें, गौरव तो उसी कमल का है जो कीचड़ में भी खिल उठता है।
- आओ कि हम खामोश रहें
  या कुछ ऐसा कहें
  जो खामोशी से बेहतर हो।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

क्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षण में उठे महत्त्वपूर्ण बिन्दु

(स्थान : BRC फतेहगंज पश्चिमी) (दिनांक : 17-18.8.2017)

पिछले दिनों हमारे BRC पर DIET द्वारा 'क्षमता संवर्धन' पर दो-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ जिसके मुख्य उल्लेखनीय बिंदु निम्नवत हैं :

- बच्चे में चिंतन (कैसे), तर्क (क्यों) और कल्पना (अगर) के कौशल-विकास और ऐसे ही प्रश्न पूछने पर जोर दिया गया।

- एक प्रमुख समस्या यह है कि हमारे पास प्रायः ऐसे उन्नत/परिवेशीय प्रश्नों का अभाव होता है जो बच्चे को उत्तर सोचने को प्रेरित करें।

- कोई भी व्यक्ति/बच्चा तभी कुछ सीख पाता है जब वह सीखने के लिए स्वयं को सहमत कर लेता है।

- पूर्ण से अंश की ओर के सन्दर्भ में कहा गया कि वाक्य से वर्ण पर आना बच्चों के लिए अधिक तर्कसंगत और रोचक है।

- TLM निर्माण को हतोत्साहित करते हुए कहा गया कि हमारे परिवेश में चारों ओर TLM का भंडार है, हमें उसी के प्रयोग का कौशल जगाना है। क्योंकि हमेशा तो नहीं, लेकिन प्रायः tlm, program आदि के आयोजन में ही अत्यंत ऊर्जा और समय लग जाता है और उसका वास्तविक उपयोग केवल कुछ ही देर का होता है।

- प्रश्नों की range बढ़ाने पर जोर दिया गया। उदाहरण स्वरुप संचालक महोदय ने अपने mike पर ही बहुत देर तक अनेक प्रकार के ऐसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी जो बहुत रोचक थे तथा जिन्होंने सरल होने के बावजूद भी हम पढ़े-लिखे लोगों को भी zig-zag में डाल दिया। प्रश्न-उत्तर सरल ही थे लेकिन अलबेले।

- बच्चों को बोलने का अधिक मौका मिले।

- बच्चों को उत्तर देकर उनसे प्रश्न बनवाये जाएँ।

- हाशिये पर पड़े बच्चों को भी सक्रियता की मुख्य धारा में लाने पर बल दिया गया।

इसके अलावा अनेक रोचक गतिविधियाँ और बातें हुईं जिनसे कई ideas और दृष्टियाँ मिलीं जिन्हें लिपिबद्ध करना मुश्किल है।

आशा है, सुधी साथियों को कुछ लाभ होगा, जो अंततः बच्चों तक पहुंचकर उन्हें भी लाभान्वित करेगा।

(प्रस्तोता शिक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

योगासन में सावधानियां

(BRC फतेहगंज पश्चिमी, बरेली में हुए Learning Outcomes प्रशिक्षण के दौरान योगासन करते समय उभरे विशेष बिंदु)

1. योगासन से पहले warm up अवश्य करें और उसका शारीरिक क्रम ऊपर से नीचे की ओर रखें।

2. जो चेष्टा दायीं ओर से करें, उसे बायीं ओर से भी करें और अनेक बार आगे-पीछे दोनों तरफ से भी।

3. शरीर संकुचन (सिकोड़ने) के समय साँस बाहर छोड़ें और शरीर प्रसार के समय साँस अंदर लें।

4. कोई भी आसन झटके से न करें, smoothly करें।

5. आसन लगाने के बाद कुछ देर तक वह मुद्रा hold करें, एकदम से न छोड़ दें।

6. जिस प्रक्रिया से उस मुद्रा तक पहुंचे हैं, उसी sequence में आराम से वापस आयें।

7. जो आसन करने में मुश्किल हो रही है, उसे करने में अधिक तो नहीं, किन्तु थोड़ा सा हानिरहित तनाव दें, फिर धीरे-धीरे करके कुछ समय में लोच उत्पन्न होने लगेगी।

8. समय के अभाव की स्थिति में आसनों में 'सूर्य नमस्कार की बारह मुद्राएं, ताड़ासन और वृक्षासन को बच्चों की दृष्टि से अधिक प्राथमिकता दें।

9. बच्चों को अपने साथ कराने की बजाय पहले खुद करके केवल उनसे देखने को कहें, बाद में साथ-साथ करने को कहें ताकि वे भली-भाँति समझ सकें।

(विशेष बात) योगासन-प्राणायाम में श्वास-प्रश्वास का विशेष महत्त्व है, अतः उस समय हँसी-मज़ाक करके साँसों की लय न बिगाड़ें।

(प्रस्तोता: प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

'संस्कृत प्रशिक्षण' के दौरान विद्वानों से प्राप्त प्रेरक विचार

(स्थान : राज्य शिक्षा संस्थान, प्रयागराज) (दिनांक : 30 अक्टूबर-2 नवंबर 2018)

* जब हम अपना धर्म नहीं छोड़ते तो संस्कृति क्यों छोड़ें?
* भाषा अधिगम में बोलने का अभ्यास सर्वप्रधान।
* बात सरल या कठिन की नहीं है, आप जो करेंगे/कहेंगे, वैसी ही बच्चे की आदत बनेगी।
* हर बच्चे को श्यामपट्ट तक लाइये, उसकी झिझक मिटाइये।

* संगीत, शब्द से पहले आता है।
  बच्चे को कहानी से भी पहले लोरी सुनायी जाती है।
  बच्चा शब्द से भी पहले गर्भ में हृदय की धड़कन सुनता है।
  मनोवैज्ञानिकों के अनुसार रोते हुए बच्चे को दिल से लगाने पर वह जल्दी चुप हो जाता है।
  अतः शिक्षा के आरंभ में संगीत, गायन, भाव-जागृति का विशेष महत्त्व है।

* (श्रेष्ठ कक्षा के लक्षण)
  मुख पर प्रसन्नता
  विमल दृष्टि
  विषय अनुराग
  मधुर वाणी

* जहाँ 'प्रदर्शन' वहाँ 'क्षुद्रता'
  जहाँ 'दर्शन' वहाँ 'उच्चता'

* एक व्यक्ति पहले प्रश्न पूछता था तो खुद को अध्यापक कहता था क्योंकि गुरुजी को पढ़कर आना पढ़ता था।
  जब अध्यापक बन गया तो खुद को विद्यार्थी कहने लगा क्योंकि अब खुद पढ़कर जाना पड़ता था।

* बच्चे को कभी-भी गलत उत्तर मत बताना।
* कभी यह भी मत कहना कि मुझे नहीं आता (अहंकार के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि कहीं उसकी 'गुरुसमर्थ' भावना को ठेस न पहुँचे)

* जैसा करना है, वैसा
  करें'गे' नहीं,
  अभी, इसी समय से।

* लक्ष्य = अच्छा इंसान × (डॉक्टर/अध्यापक/...)

(प्रस्तोता शिक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

'संस्कृत वाग्व्यवहार कार्यशाला' के महत्त्वपूर्ण प्रेरक बिन्दु

(SCERT व उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित)

(स्थान : DIET, बरेली) (20-24 दिसंबर 2018)

* हिंदी सुरक्षित रखनी है तो संस्कृत की ओर आना पड़ेगा।

* हम ऋषियों की संतानें हैं इसीलिए संस्कृत आसानी से समझ तो लेते ही हैं, वह हमारे रक्त में है।

* जिस प्रकार नल का पानी उतर जाने पर उसमें मामूली लीकेज बंद करने से या फिर ऊपर से मात्र थोड़ा सा जल डालने से वह नल भरपूर जल देने लगता है, उसी प्रकार हमें सिर्फ थोड़ा सा अभ्यास-प्रयास करना है, हम ऋषि-संतानों में सुप्त पड़ा संस्कृत-भंडार सहज ही जागृत हो जायेगा।

* योगः में विसर्ग का उच्चारण करते ही कपालभाति हो जाता है। विदेशी तो योगः बोल नहीं पाते, किन्तु हम योगः को योगा क्यों बोलते हैं!

* कोई भी अन्य भाषा बोलने से व्यक्ति हमारे क्षेत्र या प्रांत को जान जाता है किंतु संस्कृत बोलने पर नहीं जान पाता क्योंकि संस्कृत सम्पूर्ण भारतवर्ष की भाषा है।

* संस्कृत संभाषण से रक्त-सञ्चार उत्तम होने से रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

* बचपन से ही संस्कृत पढ़ने-बोलने से IQ स्तर भी बढ़ता है।

* जिस प्रकार हमने हिंदी अनुवाद पद्धति से नहीं सीखी, उसी प्रकार संस्कृत को भी शब्दों के अनुवाद द्वारा नहीं, व्यावहारिक बोलचाल के सीधे तरीके से सीखें। शुरू में थोड़ी असुविधा होगी, किन्तु आदत बिगड़ेगी नहीं।

* भाषा के चार कौशल श्रवणं, भाषणं, पठनं, लेखनं एक सीढ़ी की भाँति हैं जिनमें श्रवण-भाषण से आरम्भ करेंगे तो ऊर्ध्वगति होगी और लेखन-पठन से आरंभ करेंगे तो अधोगति होगी।

* यदि नीम की जड़ चाहिए तो पहले नीम का पेड़ खोजेंगे ऊपरी तने-पत्ती की पहचान से। इसी प्रकार संस्कृत ज्ञान-रूपी जड़ को पहचानने-पाने हेतु संभाषण रूपी तने-पत्ती द्वारा लोगों को पहले आकर्षित करना आवश्यक है। पत्ती-तना न दिखने पर जड़ भी अदृश्य ही रह जायेगी।

* संभाषण की उपयोगिता दर्शाती कथा : एक गुरु ने विदाकाल में अपने दो शिष्यों को मुट्ठी-भर चने देकर उन्हें संरक्षित रखने को कहा। पहले शिष्य ने उन्हें बर्तन में बाँधकर रखा, पूजा की किन्तु दीर्घकाल में वे घुन गये। दूसरे शिष्य ने उन्हें खेत में रोपा और सहस्त्रों-लक्ष गुणा कर लिया। अतः संरक्षण का अर्थ एक जगह रखना नहीं, प्रसार करना है जो संभाषण से होगा।

* गलत संस्कृत बोलने पर भी किसी को टोको मत। जैसे बच्चे के तुतलाने पर भी उसका उत्साहवर्द्धन करते हैं, हतोत्साहित नहीं करते।

* और प्रारंभ में कुछ उपहास भी उड़े तो कोई बात नहीं, उपहास का अर्थ है कि आप सफलता की ओर बढ़ रहे हैं। आखिर आगे हमें बढ़ना है, उपहास उड़ाने वालों को नहीं। आगे चलकर वही लोग हमें इन कार्यों का प्रमुख मान लेंगे।

* राष्ट्रनिर्माण के पाँच अंग : भाषा, जन, संस्कृति, भूभाग, इतिहास। अतः भाषा अत्यंत महत्त्वपूर्ण।

* अंग्रेजों ने पहले संस्कृत-संस्कृति रूपी हमारे माता-पिता को आघात पहुँचाया, उनकी चीजों को अपने नाम करवा लिया और फिर हमें अपने रंग में पालकर हमसे कहा कि तुम्हारे पास कुछ नहीं था, सब हमने बनाया। और हम उनको सही मानकर स्वयं को हेय समझने लगे।

* अंग्रेजों ने अंग्रेज़ी पढ़ने वालों को अधिक वेतन दिया। लोगों ने अंग्रेज़ी पढ़ी। अंग्रेज़ी पढ़ेंगे तो अच्छी नौकरी मिलेगी। लेकिन बनेंगे नौकर ही क्योंकि मालिक तो वही अंग्रेज़ थे। और आज भी वही नौकरी-नौकर-वृत्ति वाली मानसिकता कार्य कर रही है।

* राम से रामः ऐसे ही नहीं बना। राम से रामस, फिर रामर, फिर रामः (गहरा प्रक्रियागत विज्ञान)

* शब्द का मूल प्रातिपदिक कहलाता है जैसे गजः का प्रातिपदिक गज।

* माहेश्वर सूत्राणि (14) (शिव के डमरू से निकले)

* (श, ष, स के वाणी-विकार का उपचार)

1.ष हेतु : ट ट ट ट बुलवाकर अचानक ष बुलवाएं

2. श हेतु : च च च च बुलवाकर अचानक श बुलवाएं

3. स हेतु : त त त त बुलवाकर अचानक स बुलवाएं

* उक्त के अतिरिक्त व्याकरण ज्ञान, सरल संस्कृत संभाषण तथा अनेक गीत-श्लोक-गतिविधि माध्यम से सम्पूर्ण वातावरण संस्कृतमय आनंद से सराबोर रहा।

(प्रशिक्षणदाता : सर्वश्री भावेश जोशी, विश्राम जी, सतीश शर्मा जी एवं सहयोगीगण)

(प्रस्तोता शिक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

DIET, बरेली में आयोजित अंग्रेज़ी भाषा कौशल विकास प्रशिक्षण : नोट्स

(कक्षा 1-2 के लिए) (दिनांक : 25-28 अक्टूबर 2017)

(जैसा मैंने सीखा-समझा और जो मुझे appealing लगा)

1. Before teaching 'establishment of repo' (teacher-student chemistry) is must.
2. Pre-reading activities :
    (A) how to hold the book
    (B) how to open the book
    (C) how to turn the pages
    (D) how to read (left to right)
3. Use clapping to
    (A) break the sentence into words
    (B) break the word into syllables
4. Syllable is a unit of pronunciation containing a single vowel sound.
5. Word-family chart (same sound - same colour)
6. Use rhyming sentences such as :
    (A) cat saw rat.
    (B) cat on mat.
7. Logographic reading : reading the word as a picture not letter-by-letter.
8. Guided reading :
    ** I do, you watch
    ** you do, I do
    ** together we do
9. Before holding pencil :
    (A) writing on soil by stick
    (B) drawing by colours
    (C) writing on green wall by chalk
10. Use 4 lines on black-board to teach proper use of english note-book.
11. Steps of writing:
    (A) scribbling (चीता-पोती)
    (B) drawing
    (C) making letter-like forms (तिरछी lines, अर्धगोलाकार, गोलाकार, त्रिभुज, ...
    (D) letters
    (E) invented spellings (imaginary) (e.g. lat, dan)
    (F) conventional spellings (3-letter words upto 2nd grade)
    (G) creative writing

(साथियों के बीच से निकली कुछ विचारणीय बातें)

1. विद्यालय नहीं, बगीचा
2. listening very important (अभिमन्यु ने सुनकर ही चक्रव्यूह तोड़ा)
3. किताबों में सिर्फ खौफ। उससे ज्यादा तो हमारे अन्दर है।
4. तरीका : पहले कुछ दिन पढ़ाया ही नहीं, फिर थोड़ा पढ़ाया, फिर खूब पढ़ाया।
5. मिट्टी (शिक्षक, शिक्षण) कितनी भी बढ़िया हो, पौधा (बच्चा) धीरे-धीरे ही बढ़ेगा, अतः धैर्य रखें।
6. शब्दों के बीच spacing सिखाने के लिए 'one-finger gap'
7. alphabet बच्चों के नाम पर (a for asha, भ से भारती...)
8. नाम का पहला अक्षर बच्चे पर tag कर देना
9. joke सुनाकर बच्चों से समरसता, एकाग्रता
10. उपस्थिति देते समय बच्चा yes sir की बजाय फल/सब्जी/.... के नाम लेगा।
11. PRE इतना हो कि बच्चा जहाँ भी नज़र घुमाये कुछ देखे, कुछ सीखे।
12. अख़बार से चित्र काटकर notice-board या गत्ता-शीट पर चिपकाना।
13. अक्षर-विशेष को किताब में ढूंढ़कर रेखांकित करो (स्पर्धा कराना)
14. सिखाया हुआ शब्द हर बच्चे से बुलवाना।
15. alphabet-videos नियमित रूप से दिखाना।
16. Repetition works.
17. 'बुद्धू वाली कहानी' का प्रेरक मर्म
18. 'rain-rain go away' song with action (involving everyone)

(गतिविधियाँ)

1. animal-sounds निकलने की गतिविधि
2. 7 की table में 'multiples of 7 और numbers containing 7' पर ताली बजाने की गतिविधि
3. Draw the picture by narrative dictation.
4. Story telling, summary, title, picturisation
5. To make attentive : clap once, clap twice, clap....
6. Special claps (प्रस्तोता शिक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

प्राथमिक स्तरीय हिन्दी/गणित विषयक प्रशिक्षण : महत्त्वपूर्ण बिंदु

(SSA-UNICEF UP-Ignus Pahal द्वारा, 'पढ़े भारत, बढ़े भारत' (PBBB) के अंतर्गत)

(स्थान : BRC, फतेहगंज पश्चिमी, बरेली) (दिनांक : 19-20.11.2018)

(प्रशिक्षण मुख्यतः कक्षा 3 और 5 में भाषा और गणित के संबंध में था।)

- T - Targeted
  E - Enhancement
  L - Learning
  O - Outcome for
  S - Students
  (मासिक लक्ष्य बनाकर इस दौरान वृद्धि पर भी ध्यान दें।)

【हिन्दी】

- (हिंदी भाषा में Learning Outcomes के तीन चरण)
  1. बच्चे परिवेशीय मौखिक बातचीत, सवाल-जवाब कर लेते हैं।
  2. छपी सामग्री पढ़कर-समझकर, तर्क-कल्पना, जवाब-राय व्यक्त करते हैं।
  3. अपने मन से, अपने शब्दों में यथोचित वाक्य कह और लिख पाते हैं।
- (बोलने की झिझक खुलवाने हेतु गतिविधियाँ)
  1. पसंदीदा खाद्य वस्तु, खेल आदि पूछकर।
  2. आसपास के अधिकतम रंग खोजवाकर।
  3. चित्र को 'पढ़वाकर', तत्सम्बन्धी सरल प्रश्न पूछकर।
- (तर्क-कल्पना शक्ति के विकास हेतु गतिविधियाँ)
  1. नाम के प्रथम अक्षर से 2 मिनट में अधिकतम शब्द बनाओ-बताओ।
  2. अंत्याक्षरी, जिसमें अंतिम अक्षर से कोई पूर्व-निर्धारित श्रेणी वाला शब्द बनाओ (जैसे शहर, फल, नदी और पशु में से ही बताना है)।
  3. कोई दो शब्द देकर उनसे अधिकतम शब्दों का वाक्य बनवाना।
  4. दो वस्तुओं में समानता के बिंदुओं की खोज कराना, जैसे हाथी और सुई।
  5. ऐसे प्रश्न बनवायें जिनका उत्तर 'हाँ', 'नहीं', 'शायद' और 'कभी-कभी' में ही हो।
  6. हर बच्चे से एक-एक पंक्ति जोड़कर कहानी बढ़वाना।
  7. वाक्य में रिक्त स्थान छोड़कर उस शब्द की खोज कराना।

- बच्चे को ऐसा बनाएं कि वह सिर्फ आपके सामने ही नहीं, अजनबी के सामने भी मुखर होकर अभिव्यक्ति कर सके।
- एक शब्दीय उत्तर वाले प्रश्न ज़्यादा न पूछकर ऐसे प्रश्न पूछें जिसमें बच्चे के पास अधिक बोलने का अवसर हो। 'क्या', 'कौन' की बजाय 'कैसे' वाले प्रश्न अधिक पूछें।
- पाठ पढ़ाने से पहले बच्चे के मन में कोई जिज्ञासा डालें ताकि बच्चा पाठ को ध्यानपूर्वक सुने।
- भाषा परिस्थिति के अनुसार सन्दर्भ ग्रहण करती है। जैसे 'दरवाज़ा खुला है'; संदर्भ भिन्न होने पर अर्थ भी भिन्न।

- (लिखने की तैयारी, कक्षा 1-2 हेतु)
  1. पहले 15 दिन तो केवल सीधी रेखाओं, तिर्यक रेखाओं, वक्र आदि मूल आकृतियों का अभ्यास करायें।
  2. उसके बाद जिस दिन जो वर्ण पढ़ाएं, अगली बार नये वर्ण के साथ पिछले दिन के वर्ण को भी साथ में लेकर चलें। (Top to Tail)
  3. छोटा बड़ा 'अ' न कहकर अ, आ का ध्वन्यात्मक अंतर करके बताएँ।
- बच्चे का लेखन-लिपि से संबंध माँ जैसा हो जो लगातार उसके सान्निध्य में रहती है, मौसी जैसा नहीं, जो कभी-कभी आती है और बच्चा भूल जाता है। अर्थात लिपि को पहचानने का अभ्यास बना रहे।
- शब्द को अक्षर, मात्रा में तोड़कर पढ़ना, पढ़ना नहीं क्योंकि बच्चा वाक्य के अंत तक पहुँचते-पहुँचते शुरुआती शब्दों से उसका तारतम्य भूल चुका होता है।
- (सीखने के चार चरण)
  E - Experience (अनुभव करना)
  R - Reflection (चिन्तन)
  A - Application (अनुप्रयोग)
  C - Consolidation (निष्कर्ष/समेटना)
  (हर गतिविधि में उक्त चारों अवश्य हों)
- (गतिविधियों के लाभ)
  1. ज्ञान स्थाई होता है।
  2. सीखना रुचिपूर्ण बनता है।
  3. सीखने की गति तीव्र होती है।
  4. सक्रिय सहभागिता रहती है।
  5. स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से क्षमता-सुधार।
  6. उपस्थिति में सुधार।
  (ध्यान रहे कि गतिविधि में 1. अनुशासन भंग न हो, 2. लक्ष्य से भटकाव न हो।)
  (स्वतंत्रता का अर्थ उद्दंडता नहीं)

【गणित】

- (गणित सीखने का क्रम)
  E - Experience (ठोस वस्तुओं से आरंभ)
  L - Language (ठोस वस्तु के साथ क्रिया में दैनिक भाषा का प्रयोग)
  P - Picture (चित्रों के द्वारा अवधारणा पुष्ट करना)
  S - Symbol (अंततः उनका गणितीय प्रतीक बताना)

- गणित में मुख्य बात है 'अभ्यास'।
- 'सही उत्तर' से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है 'सही प्रक्रिया', जो बच्चे की समझ को दर्शाती है।

(प्रशिक्षकगण : श्री मनोज शर्मा, सुश्री नम्रता वर्मा, श्री गौरव सक्सेना, श्री रमेश पपने, सुश्री प्रीति) (विशेष संबोधन : श्री राजीव श्रीवास्तव 'BEO', श्री मुकेश भार्गव, 'Ignus पहल')

(संयोजन एवं प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

Notes of Training for English-medium teachers

(स्थान : DIET, Bareilly) (दिनांक : 24-28 March 2018)

(As I learnt)

A child learns through :

1. Imitation
2. Experience
3. Observation
4. Environment
5. Individual differences
6. Doing
7. Repetition

Language skills

(On the basis of sequence/importance)

(A) Primary/Proper : 1. Listening 2. Speaking

(B) Secondary/Casual : 1. Reading 2. Writing

(On the basis of input-output)

(A) Receptive : 1. Listening 2. Reading

(B) Productive : 1. Speaking 2. Writing

Methods of language learning

1. Direct method : सीधे English conversation, जैसे हम हिंदी सीखते हैं।
2. Indirect method : Translation-cum-grammar
   (UP board style, fluency में मनोवैज्ञानिक बाधा)
3. Bilingual method
4. Dr. West method : reading-focussed
5. Situational technique
6. Structural approach : this is a .....
   this is a .....

* Language is caught, not taught.
* भाषा सन्दर्भों से अर्थ ग्रहण करती है।
* The process is : Listening > understanding > following
* Three requirements to learn language :
  1. Exposure 2. Motivation 3. Repetition

Prepare a list of :

1. Simple commands.
2. Personal questions
3. Likes-dislikes
4. Surroundings objects.... words
5. Sorry, thank you, welcome....
6. Wishing words

* Spelling पर जोर देकर बच्चे की सहजता को बाधित बिलकुल न करें।
* Words की सहायता से letter-sound सिखाएं।
* After gaining phonic capability, the child should be able to cater the rythm.

Ideas to apply :

- During attendance 'my name is .....'
- हम comparison/contrast में सीखते हैं, इसलिए एक दिन में दो letters सिखाएं तो बेहतर, लेकिन थोड़ा अंतर देकर।
- For development of primary skills, start with rhymes.
- For development of writing skill start with chalk.
  (Just filling up a circle on floor, a pleasure task)
- Frame 50-60 sentences and paste at wall.
- Letters in the form of dots वाली मोहरें बनवाकर बच्चों की कॉपी पर छापकर देना और writing skill विकसित करना।
- बच्चों को attendance के समय साप्ताहिक task देकर skill-development
  (जैसे इस सप्ताह बच्चे प्रदेश और उसकी राजधानी बोलेंगे,
  अगले सप्ताह इमारतें और उनका स्थान बोलेंगे, ...
  (बोलने वाले के साथ-साथ अन्य बच्चों को सुनकर याद)
- More and more chances should be given to children to express their views and fantasies.
- Morning assembly should be enriched with activites.
- Create healthy competition among children filled with joy, as through competition children learn attentively.
- बच्चों को drawing इसलिए पसंद होती है क्योंकि उसमें रंग होते हैं। इसलिए उनकी इस रुचि का इस्तेमाल करके colourful pics बनवाएं।
- Important 3Ps : Patience, Persistence, Perseverance
- खेल-खेल में शिक्षा पर जोर दें तो और बेहतर।
- बच्चों की notebooks पर colourful objects बनाकर उनको आकर्षक बना सकें तो बच्चों को एक सुखद अनुभूति होगी।

Skills of maths teaching :

E - Experience
L - Language
P - Picture
S – Symbol

* Number : Idea in abstract form
  Numeral : Definite representation as symbol
* smaller than (<) greater than (>) का प्रयोग सिर्फ numerals में होता है।
  जैसे : 5<7 (कम<ज़्यादा) सही है लेकिन चींटी<हाथी (छोटा<बड़ा) गलत है।
* गणित में 0 का अर्थ है 'एक भी नहीं', गणित में 0 का अर्थ 'कुछ नहीं' गलत है।

(ज्ञानदाता : प्रमोद सर, शैलजा मैम, अमर सर, अर्चना मैम, maths tot सर आदि)

(प्रस्तोता शिक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)